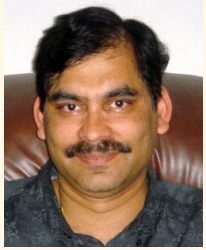

उमेश ताम्बी

जन्म, नागपुर के समीप तुमसर शहर में उद्योगी परिवार में हुआ. नागपुर विश्वविद्यालय से १९८७ की प्रावीण्य सूची में अभियांत्रिकी स्नातक में प्रथम स्थान पाया, १९८९ में एडमिनिस्ट्रेशन में स्नातकोत्तर. १९९९ तक स्वयं के उद्योग-व्यवसाय में भारत में सफलता पाने के बाद अमेरिका पहुँचे. साफ्टवेयर के क्षेत्र में कार्यरत हैं. फिलाडेल्फिया के पास परिवार के साथ रहते हैं. हिंदी भाषा के प्रति अटूट प्रेम, बचपन से ही हास्य और व्यंग्य कविताओं के प्रति रुचि रही है. कुछ समय से अनुभव और विचारों को साहित्य और काव्य का रूप देने का प्रयास शुरू किया है.

सम्पर्क : फिलाडेल्फिया, यू.एस.ए. ईमेल : umeshtambi@yahoo.com

ग्यारह दिवसीय फिलाडेल्फिया गणेशोत्सव

चारों ओर बिखरे परंपरा के रंग

नार्थ अमेरिका का सर्वप्रथम भव्य सार्वजनिक गणेश उत्सव भारतीय कल्चरल सेंटर, भारतीय टेम्पल एवं फिलाडेल्फिया मराठी मंडल के संयुक्त तत्वावधान में फिलाडेल्फिया के समीप मान्ट्गामरी विल (पेन्सिलवेनिया) स्थित भारतीय टेम्पल के सभागृह एवं प्रांगण में गत १५ सितंबर से २५ सितंबर २००७ के बीच आयोजित किया गया। उल्लेखनीय है कि इस सामूहिक समारोह का यह तीसरा साल है जिसमें रोजाना सैकड़ों धर्मप्रेमियों और प्रमुख रूप से भारतीय मूल के लोगों ने परिवार सहित सम्मिलित होकर सुखकर्ता-दुखहर्ता श्री गणेशजी की आराधना की और भारतीय लोक कला, संस्कृति के दर्शन लाभ लिये।

पहले दिन दो हजार से ज्यादा लोगों की उपस्थिति में संस्कृत श्लोकों के उच्चारण और गणपति बप्पा मोरया के जयघोषों के साथ गणेशजी की प्रतिमा स्थापना की गयी। ढोल-ताशों और पारंपरिक वाद्यों की ध्वनियों के बीच नाचते गाते श्रद्धालु भक्तों ने पेण, जिला रायगढ़, महाराष्ट्र से आयी गणेशजी की आकर्षक मूर्ति को मूषक रथ पर सुशोभित करके पालकी में शोभायात्रा निकाली। साथ में हजारों भक्तगण ध्वज-पताका, क्षत्र लिये इस अनूठी राजसी यात्रा में शामिल थे। इस अवसर पर भारतीय बाल विहार, प्लिमथ बाल विहार के बच्चों और पालकों ने विशेष रूप से रंग-बिरंगी भारतीय पोशाकों में तैयार होकर अद्भुत लोक कला और लोक नृत्यों का प्रदर्शन किया। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो नार्थ अमेरिका में भारतीय उत्सवों को विधिवत मनाने का बिगुल बज रहा हो। इस क्षेत्र में बढ़ रही भारतीय समुदाय की उपस्थिति से अब ऐसा अहसास हो रहा है कि भारतीय उत्सवों और त्योहारों के आयोजन यहाँ लगातार होते रहेंगे।

ग्यारह दिनों तक धूमधाम से मनाये गये इस उत्सव में रोजाना शाम को श्रीगणपति अथर्वशीष का वाचन, पूजा- अर्चना और आरती की गयी और नियमित रूप से महाप्रसाद-भोजन का वितरण किया गया जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया। खास बात यह देखने में आयी कि श्रद्धालुजन पूजा के लिये लंबी-लंबी कतारों में स्वयं अनुशासित होकर घंटों खड़े रहे।

आयोजन की हरेक शाम मनोरंजन के नाम रही। मनोरंजन कार्यक्रमों की श्रृंखला में अमेरिका के विभिन्न शहरों से और भारत से आये प्रोफेशनल कलाकारों ने भारतीय नृत्य, नाटक और संगीत की प्रस्तुतियाँ दीं, जिसमें ३ हिंदी आर्केस्ट्रा, ६ शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम, २ अंग्रेजी ड्रामा और करीब आधा दर्जन भारतीय भाषाओं के कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। इनमें न्युजर्सी से आये प्रसिद्ध युगल युवा कलाकार संजीव और अरमीन रामाभद्रन ने सिद्धिविनायक की अर्चना द्वारा पहले मनोरंजन कार्यक्रम का श्रीगणेश किया और लगातार ३ घंटों तक भूले-बिसरे गीतों से सभी का मन मोह लिया। उन्होंने अन्य भारतीय भाषाओं में भी गायन किया। अन्य कार्यक्रमों में डॉ. मीना नेरुड्कर द्वारा निर्देशित हनुमान मीट्स सुपरमेन, पं. शिवकुमार शर्माजी के शिष्य पं. सतीष व्यास का संतूर वादन, किराणा घराना के प्रसिद्ध गायक पं. कैवल्यकुमार का शास्त्रीय संगीत, उस्ताद अमजद अली खान के शिष्य देवशंकर व ज्योतिशंकर का वायलिन वादन, किरण जोगळेकर एवं उनके फिल्म जगत के साथियों द्वारा दास्तान, आर्केस्ट्रा, गुजराती नाटक जोगर्स पार्क और अर्चना जोगळेकर और शिष्याओं द्वारा प्रस्तुत नृत्य नाटिका का मंचन सम्मिलित है।

दो दिवसीय आनंद बझार में कई किस्मों के स्टाल लगाये गये। मेले में इस बार बच्चों की मनपसंद झुक-झुक गाड़ी और मनोरंजन के अन्य साधन उपलब्ध थे, जिन्हें सभी ने पसंद किया।

इस ग्यारह दिवसीय आयोजन के समापन अवसर पर पुनः शोभायात्रा निकाली गयी। सुनियोजित समय पर पालकी में विराजमान श्री गणपति जी का विधिवत विसर्जन समीप के तालाब में नौका में ले जाकर किया गया। चलयात्रा कार्यक्रम के अंश टी.वी. एशिया पर भी प्रसारित किये गये। सुंदर ढंग से आयोजित इस कार्यक्रम की सफलता भारतीय टेम्पल और फिलाडेल्फिया मराठी मंडल के सभी सक्रिय कार्यकर्ताओं के अथक प्रयास और निस्वार्थ सेवा का फल है जिसका रसास्वादन हजारों प्रवासी भारतीयों और स्थानीय निवासियों ने लिया।

इस कार्यक्रम के प्रमुख प्रायोजक अशोक एवं संजीवन सोनी, वेंकट एवं विजया रेड्डी थे। सहभागी संस्थाएँ भारतीय मंदिर, फिलाडेल्फिया मराठी मंडल, भारतीय विद्यालय, प्लिमथ बालविहार, तेलगु एसोशिएशन, इंडो अमेरिकन क्लब, गुजराती समाज, तमिल एसोशिएशन, श्रुति, संगीत सोसायटी ने हिस्सा लिया। श्री वैद्यनाथन शास्त्रीगल, पं. विष्णु प्रसाद वास्याल एवं मंदार जोगलेकर ने अन्य सहभागियों के साथ पूजा-अर्चन की जवाबदारी संभाली।

फिलाडेल्फिया गणेश फेस्टिवल के संस्थापक श्री मुकुंद कुटे के मार्गदर्शन में इस वर्ष उत्सव के आयोजन की कमान श्री गणेश पाटिल, प्रमोद कोतवाल, विपुल राठोड एवं सौं. त्यागराज शारदा ने संभाली। अन्य कार्यकर्ताओं के अलावा नंद एवं शशी टोडी, संजीव एवं अंजु जिंदल, संजीव लाल, किरण पडगांवकर, मंदार-गौतमी जोगलेकर, हरनाथ डोडापनेनी, निरंजन सामंत, आर. सुकुमार, दिलीप-रिता सेठ, निता-प्रवीण शर्मा, एन्डी सुरी, धनंजय समुद्वार, मोहिन्दर सरदाना, पथ्ररी प्रसाद, हर्षद अभ्यंकर, मनीष इंगले, आशीष नाडकर्णी, शीतल विभुते, शिरीष जोगलेकर, विमेश ताम्बी, डॉ. नीलिमा कुटे, अल्का राठोड, मोहना पड्गांवकर, प्रा. मिलिन्द रानडे, केदार गिद्द ने तन-मन-धन से योगदान दिया जो विशेष रूप से उल्लेखनीय है। गणेश प्रतिमा की साज-सज्जा का जिम्मा सरिता कोतवाल ने उठाया। इसके अलावा यशोदा बेन राठौड, मुकेश दवे एवं पद्मा बेन ने भी सराहनीय सहयोग दिया। नयी पीढ़ी के विमेश ताम्बी और अखिल जिंदल ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया।

आयोजकों ने अपनी जन्मभूमि से हजारों मील दूर रहकर यह प्रयास किया और आभास दिलाया कि भारतीयों के हृदय में मातृभूमि के प्रति जो अटूट प्रेम है वह नयी पीढ़ी तक पहुँचाने में, साथ ही साथ शांति, सादगी, सद्भाव, आदर और अपनत्व जो हमें विरासत में मिले हैं उन्हें पश्चिम की सभ्यता के आकर्षण से बचाने में इस प्रकार के सार्वजनिक कार्यक्रम न केवल सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं, बल्कि सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

बिना किसी व्यवधान के संपन्न इस अनूठे आयोजन के कारण स्थानीय लोगों में भारतीय उत्सव, समारोह, संस्कृति और खाद्य पदार्थों के प्रति जागरूकता बढ़ना सहज ही था और इंडियन कम्युनिटी के प्रति बढ़ता हुआ रुझान मील का पत्थर साबित हुआ। विदेशों में स्थित अनेक भारतीय सांस्कृतिक संस्थाओं के लिये यह आयोजन प्रेरणास्रोत के तौर पर उभर कर सामने आया है।